OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 3 [May- Jun] Year 2026*

Research Article

कुलजम स्वरूप का दार्शनिक अनुशीलन

आदित्य सिंह यादव

Ph.D. Scholar, विभाग, दर्शनशास्त्र, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * आदित्य सिंह यादव

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21062409

सारांश

महामति श्री प्राणनाथ जी (१६१८-१६९४ ई.) की श्री मुखवाणी - श्री तारतम सागर (श्री कुलजम सरूप) के सत्रह ग्रन्थों के अवतरण का हेतु, मानव चेतना रूपी परिधि पर विभिन्न भाषा, संस्कार भेदों तथा सांस्कृतिक पृष्ठ भूमियों के अनेक बिन्दुओं पर स्थित मानव आत्माओं को उनके अन्तिम गन्तव्य-केन्द्र-बिन्दु जागनी अथवा पूर्णब्रह्म परमात्मा के अनन्त स्वलीलाद्वैत की साक्षात् अनुभूति-भूमि परमधाम तक का सेतु निर्माण है, जिसके सातवें ग्रन्थ सनंध का बाह्य प्रयोजन बादशाह औरंगजेब की धर्म संबंधी कट्टर एवं संकीर्ण समझ की अंधेरी दीवालों को कुरान शरीफ के सही एवं गुह्य मायनों के पवित्र प्रकाश द्वारा मिटाकर, उस संकीर्ण स्वभाव के सभी लोगों को, आत्म-साक्षात्कार की जागनी-उपलब्धि तक पहुँचा देना है।

120 प्रणामी सम्प्रदाय और जागनी दर्शन
"सागर" ग्रन्थ में कहा गया है

आया इलम लुंदनी एक है, केहे साहेदी एक खुदाए ।। 20
अरस देख्या रूह अल्ला, हक सूरत किसोर सुन्दर ।। 2।
सर्वश्रेष्ठ परब्रह्म परमात्मा एक है- कहे खुदा एक मंहमद बरहक।। 22
कुरान में भी एक परमात्मा की साक्षी दी गई है- 'सबका खाविंद एक' ।।

वेद भी एक ही ब्रह्म की घोषणा करते हैं :

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 18-05-2026
- **Accepted:** 27-06-2026
- **Published:** 30-06-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 1287-1290
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

आदित्य सिंह यादव. कुलजम स्वरूप का दार्शनिक अनुशीलन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):1287-1290.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: कुलजम स्वरूप, तारतम सागर, तारतम वाणी

© 2026 आदित्य सिंह यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

कुलजम स्वरूप, जिन्होंने अपने समय में तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों को दूर करने का भरसक प्रयास किया। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने विचारों में अडिग रहकर उन्होंने तत्कालीन राजसत्ता को ललकारा और सुधी समाज को जागनी के द्वारा उद्‌बुद्ध किया। कर्मकाण्ड की बेड़ियों में जकड़े समाज के सभी मत-पंथावलम्बियों की सद्धर्म एवं अध्यात्म का वास्तविक स्वर एवं स्वरूप समझने के लिए प्रेरित किया। धर्म के नाम पर हो रही खींचातानी एवं मतवैभिन्य को समाप्त करने के लिए विश्व-धर्म का स्वीकार्य स्वरूप खड़ा किया। 18,75,8 चौपाइयों में संकलित उनकी वाणी अथवा कुलजम स्वरूप तारतम बानी अध्यात्म ज्ञान का एक विशाल महाग्रन्थ है, जिसमें वेद और कतेब पक्ष का सुन्दर समन्वय हुआ है। अपने पूर्वाग्रह का परित्याग कर कोई भी धर्मानुयायी अध्यात्म के यथार्थ तक पहुँचना चाहे तो उनके लिए यह ग्रंथ एक दिशा-निर्देशक के रूप में सहायक सिद्ध होगा।आज के इस चरम वैज्ञानिक युग में सत्याधारित, स्पष्ट एवं युगानुकूल धर्म की आवश्यकता है। अनावश्यक कर्मकाण्ड एवं पूजा-पद्धति से नई पीढ़ी भागती जा रही है। महामति ने आज से 350 वर्ष पूर्व ही इस स्थिति पर चिन्तन किया था। सभी धर्म ग्रंथों के दर्शन पक्ष को समेटकर उसमें अपनी मौलिक चेतना भरकर उन्होंने समाजानुकूल युगधर्म की शिक्षा दी, जो आज की सन्तति के लिए अत्यन्त अनुकूल प्रतीत होता है। आज भी समाज का एक वर्ग धर्मान्धि बनकर विश्व में आतंक सृजित कर रहा है। जेहाद के नाम पर विद्रोह, विस्फोट एवं हत्याएँ हो रही हैं। उदार भारतीय समाज ने हमेशा इसका विरोध किया है। धर्म तो सेतु के समान है, जो एक दूसरे को जोड़ता है।

2. साहित्य समीक्षा

लेखक/स्रोत मुख्य बिंदु

1. डॉ. भगवानदास गुप्ता (1968) प्रणामी धर्म का इतिहास, प्रणामी संप्रदाय ने कबीरपंथ, नानकपंथ की भाँति हिंदू-इस्लाम समन्वय को व्यवस्थित किया।
2. डॉ. दशरथ शर्मा (1970) प्रणामी धर्म का इतिहास, जामनगर से प्रसार
3. प्रो. ए.के. मजूमदार (1985) तारतम सागर में कुरान-वेद समन्वय
4. ICHR Seminar, 2019 (Delhi) प्रणामी धर्म ने भारतीय संविधान के धर्मनिरपेक्षता के सांस्कृतिक आधार को 300 वर्ष पूर्व प्रस्तुत किया।
5. प्रणामी ट्रस्ट, जामनगर (2020) निजानंद संहिता का प्रकाशन
6. Saha, Ranjit. Mahamati Prannath: Tartam Bani Vimarsh. Vani Prakashan, 2023.0e2db6

Journal of Indian Intellectual Traditions (2022) कुलजम स्वरूप को विश्व का प्रथम अंतरधार्मिक ग्रंथ-संकलन माना गया।

3. शोध प्रविधि

इस शोध में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति अपनाई गई है। वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग प्रणामी धर्म के ऐतिहासिक विकास, मूल ग्रंथों, सिद्धांतों और परंपराओं को प्रस्तुत करने हेतु किया, विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों—दर्शन, भक्ति, भाषा, समाज, और शिक्षा—पर प्रणामी धर्म के योगदान का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया। शोध की प्रकृति : यह अध्ययन गुणात्मक है, जिसमें ग्रंथ विश्लेषण, दस्तावेजी अध्ययन, सामग्री विश्लेषण ऐतिहासिक तुलनात्मक पद्धति विचारों, सिद्धांतों, व्याख्याओं और ग्रंथीय आधार का गहन अध्ययन शामिल है।

लिखित पुस्तकों, शोध प्रबंधों, लेखों और इतिहासकारों की व्याख्याएँ!

4. विश्लेषण और विवेचन

प्रणामी धर्म की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: प्रणामी धर्म का उद्भव 17वीं शताब्दी में गुजरात, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में हुआ। इसके संस्थापक महामति प्राणनाथ ने सभी धर्मों में समान सत्य देखने की शिक्षा दी। उनका मुख्य उद्देश्य मनुष्य को ज्ञान, भक्ति और सत्य के मार्ग पर चलाना था।

5. दार्शनिक योगदान

तो सिफत सब महंमद की, सो महंमद कह्या जो स्याम।
अबल आखर दोऊ दीन में, एही बुजरग महंमद नाम ॥ किरंतन, 121/5
त्रिगुण तिचकर अवतार, कई फरिश्ते पैराम्बर।

तिन सबकी शोभा ले स्याम, आया महंमद पर ॥ किरंतन, 61/2

जो कृष्ण ब्रह्मरूप में वेद, उपनिषदों एवं भागवत के परम नियामत एवं अद्वैत स्वरूपी हैं, काही अपने श्याम या साम-स्वरूप में कतेब धर्मग्रंच एवं कतेब संस्कृति एवं परम्परा के पैग़म्बर या हादी भी हैं, जिन्होंने सामी परम्परा का सूत्रपात किया। महामति ने तत्कालीन सन्दर्भ में प्रगतिधर्मी एवं विवादास्पद होते हुए भी इसका एक अखिल एवं समाहारी स्वरूप उपस्थापित किया। साथ ही, उन्होंने इस अवधारणा को सर्वाधिक महत्त्व दिया कि समस्त अवतारी शक्तियाँ, भले ही, वे किसी विशेष धर्म या सम्प्रदाय के लिए, पूज्य या मान्य हों, एक ही परमात्मा की अंश होती हैं। परमात्मा ही एकमात्र अंशी है और वही अपनी इच्छा से विभिन्न कायों, निकायों या कलाओं में विच्छुरित होता है। यही अपने आदेशानुसार और आवश्यकतानुसार उनके माध्यम से किसी विशेष युग, क्षेत्र या विशिष्ट कालखण्ड या समाज में स्वयं को प्रायोजित या निविष्ट करता है।

धाम धनी पेहेचान के, फेर-फेर देत में पीठ ॥ किरंतन, 42/2

महामति के लिए विरह की तीव्रता या प्रियतम-सान्निध्य की उत्कटता, अंगना की अविभाज्य तपश्चर्या का अनिवार्य अंग है। इसलिए प्रिय वियोग और तज्जान्या विरहकातरवणा का मुखर वर्णन महामति की वाणी का अप्रतिम श्रृंगार हो उठा है। विरहारिन ही अंगना के अन की कसौटी है, जिसमें तपकर या निखरकर ही उसका प्रेम प्रगाढ़ या पुष्ट होता है। विशार्दन अंगना ही प्रियतम के शीतल-सुखकर अंगराग का अनुभव कर सकती है-

दुख से पीउ जी मिलसी, सुखें न मिलिया कोए। अपने धनी का मिलना, सो दुखे से होए ॥ किरंतन, 17/10

महामति प्रियतम मिलन के लिए दुःख को ही प्रिय-विरह की अंतिम, महलमा और अनिवार्य कसौटी मानते हैं। दुःख प्रेम को तीव्रतम विरहानुभूतियों से दीप्त करता है और आत्मसमर्पण के लिए प्रेरित भी। दुःख और विरह की कीमत चुकाकर ही प्रिय-प्रेम प्रगाढ़ और परिपुष्ट होता है-

दुखतें विरहा उपजे, विरह प्रेम इसक।

© 2026 आदित्य सिंह यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इसका प्रेन जब आइया, तब नेठेचे मिलिए ठक ॥ कितन, 17/16

पुण्यात्मा के लिए दुःख और विरह, आत्म-त्याग, आत्म-समर्पण और आत्म-धिक्कार के साथ आत्म-निग्रह भी प्रेम के संसाधन हैं-ये कोई प्रचार-साधन नहीं। इसलिए विराहाकुला करना बार-बार प्रेम की पीड़ा माँगती है। उसके विहल एवं प्रिय-वियुक्ता चित्त में यही तलाक शेषा राहतती है कि जिसके विरह में इतना आनन्द है, उसके मिलन में कितना रस होगा? वह उस आखण्ड प्रेस विहार की कल्पना और संभावना से प्रिय-विरह में भी दत्त-चित्त हो उठती है। परीक्षा की इस कठिन घड़ी में भी विरहजनित दुःख-दैन्य, ताप-अनुताप या अवसाद प्रियतमा आत्मांगना के लिए एक सीमा तक वरदानस्वरूप होते हैं।

6. निष्कर्ष

कुलजम स्वरूप ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और सामाजिक अभियान में सीधे मुगलिया सल्तनत के सबसे अनुदार और इस्लाम के कट्टर बादशाह औरंगजेब से टकराना पड़ा। लगभग चालीस वर्षों तक निरन्तर वे व्यक्ति और समाज, शासक और समुदाय और फिर 'सुन्दर साथ' के साथ पूरी जाति को झिंझोड़ते-झकझोरते रहे। लेकिन इस विरोध में विध्वंस का स्वर नहीं था, वहाँ देश, धर्मादर्श तथा आत्मा-परमात्मा के शाश्वत सम्बन्ध के साथ, सामूहिक जागनी एवं आध्यात्मिक स्तर पर, उत्थान का मुखर संकल्प था।

महामति प्राणनाथ का आध्यात्मिक अभियान सामाजिक नवोत्थान के साथ एक ऐसे विश्व समाज और विश्व धर्म के सन्देश से जुड़ा था जिसकी आकांक्षा सदियों से की जा रही थी। इसलिए उनके प्रशंसकों, अनुयायियों, 'सुन्दर साथ' को और यहाँ तक कि विधर्मी एवं विरोधियों को भी महामति प्राणनाथ-जैसे असाधारण मनीषी के सर्जक व्यक्तित्व में वे सारी विशिष्टताएँ एक साथ दीख पड़ीं। उन्हें परमात्मा के सच्चे प्रतिनिधि एवं प्रवक्ता के रूप में 'प्राणनाथ' और युगान्तरकारी 'निष्कलंक बुधावतार' तक के दर्शन हो गये। इतने सारे दायित्वों और भूमिकाओं का निर्वाह जिस कौशल से और विना किसी चमत्कार के महामति के संकल्प और संघर्ष द्वारा सम्पन्न होता चला गया-वह भारतीय धर्म साधना के इतिहास एवं परिदृश्य में सचमुच अद्‌भुत और अनूठा था। इसीलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उनका सहज किन्तु प्रभावी व्यक्तित्व उनके प्रशंसकों, पाठकों, अनुगतों, समर्थकों और सबसे बढ़कर उनके अनुयायियों को लोकोत्तर प्रतीत होता है।

संदर्भ सूची

1. महामति प्राणनाथ। तर्तम सागर (कुलजम स्वरूप)। जामनगर: प्रणामी मंदिर ट्रस्ट; 1675.
2. महामति प्राणनाथ। कुलजम स्वरूप। जयपुर: अध्यात्म प्रकाशन; 1998.
3. महामति प्राणनाथ। तर्तम सागर। प्रणामी मंदिर ट्रस्ट, संपादक। अहमदाबाद: प्रणामी प्रकाशन; 2004.
4. त्रिवेदी मोहनलाल। महामति प्राणनाथ और उनका दर्शन। जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी; 2005.
5. शास्त्री हरिप्रसाद। तर्तम सागर और प्रणामी परंपरा। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन; 2008.
6. आचार्य गोविंदलाल। प्रणामी धर्म: एक समग्र अध्ययन। अहमदाबाद: प्रणामी मंदिर प्रकाशन; 2010.
7. Saha R. Mahamati Prannath: Tartam Bani Vimarsh. New Delhi: Vani Prakashan; 2023.
8. शर्मा उमेश। प्रणामी धर्म और समाज सुधार: एक विश्लेषण। जर्नल ऑफ इंडियन रिलीजियस ट्रेडिशन्स। 2016;12(2):44-56.
9. यादव केपी। महामति प्राणनाथ का भारतीय भक्ति चिंतन में योगदान। इंडियन फिलॉसॉफिकल रिव्यू। 2017;23(1):77-89.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

आदित्य सिंह यादव दर्शनशास्त्र विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत में पीएच.डी. शोधार्थी हैं। उनकी शोध रुचियों में भारतीय दर्शन, नैतिक दर्शन, ज्ञानमीमांसा, सामाजिक एवं समकालीन दार्शनिक विमर्श शामिल हैं। वे दार्शनिक चिंतन को समाजोपयोगी दृष्टिकोण से विकसित करने तथा अकादमिक अनुसंधान में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं।

© 2026 आदित्य सिंह यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/